# पवित्र बाइबल - १

पवित्र बाइबल एक वृहद पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न लेखकों की कई पुस्तकें हैं। ''बाइबल'' शब्द यूनानी भाषा के बिबलिया शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है ''पुस्तकें''। बाइबल की पुस्तकों के लेखन में १००० से अधिक वर्षों का समय लगा और इसे वर्तमान स्वरूप में आने में २००० वर्ष और लगे। आज ६७० भाषाओं में सम्पूर्ण बाइबल उपलब्ध है, जबकि १५२१ भाषाओं में नया नियम उपलब्ध है। ३३१२ भाषाओं में बाइबल की कुछ पुस्तकें जैसे भंजनसंहिता, मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना रचित सुसमाचार उपलब्ध हैं जबकि कई भाषाओं में अनुवाद कार्य अभी जारी है।

बाइबल पुस्तकों की पुस्तक है, जो ६६ पुस्तकों का संग्रह है और दो भागों में बंटा है। (१) पुराना नियम - ३९ पुस्तकें (२) नया नियम - २७ पुस्तकें। इन दोनों नियमों में प्रयुक्त शब्दावली दुसरी शताब्दी के अंत तक सामान्य रूप से प्रयोग में नही आयी थी। ये दोनों भाग परमेश्वर की महान वाचा के अनुसार हैं जो उसने अपनी प्रजा के साथ बांधी थी। परमेश्वर की मूल वाचा निर्गमन २४:८ में मिलती है जहाँ लिखा है, ''मूसा ने लोहू को लेकर लोगों पर छिड़क दिया, और उनसे कहा, देखो, यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बाँधी है।'' इस वाचा का नवीनीकरण २ राजा २३:२ में मिलता है जहाँ लिखा है, ''योशियाह राजा यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों और याजकों और नबियों वरन छोटे बड़े, सारी प्रजा के सब लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन में गया। तब उसने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़कर सुनाई।'' इसके बाद नये नियम में एक नई नयी वाचा सामने आती है जो प्रभु यीशू मसीह ने बाँधी थी। मत्ती २६:२८ में लिखा है, ''यह वाचा का मेरा वह लोहू है जो बहुतों के लिए, पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।''

आज जिस रूप में बाइबल हमारे पास है, उसका आरम्भ एक बड़े ग्रन्थ के रूप में नहीं हुआ था, जिसमें पुराना नियम और नया-नियम एक साथ हों। इस संकलन के लिए एक लम्बी चयन प्रक्रिया हुई जिसे 'केननाइजेशन' कहते हैं। केनन शब्द के लिये यूनानी भाषा का जो शब्द प्रयुक्त हुआ उसके कई अर्थ हो सकते हैं, जैसे ''मापने की छड़ी'' या ''रेखक''। प्रारम्भिक कलीसिया के अगुओं ने ''केनन'' शब्द को ''मानदण्ड'' के अर्थ में प्रयुक्त किया और बाद में आधिकारिक लेखों की एक ''सूची'' या ''सारणी'' के रूप में तैयार किया। सम्पूर्ण रोमन साम्राज्य की कलीसियाओं में बहुत सी पुस्तकें प्रचलित थीं जिन्हें आरम्भिक कलीसिया में पढ़ा जाता था। उस समय कलीसिया के अगुओं के लिए यह आवश्यक था कि वे सुनिश्चित करें कि परमेश्वर के लोगों के लिये कौन सी पुस्तकें पवित्र और आधिकारिक हैं। इस निर्णय तक पहुँचने में १५०० वर्ष लग गए, कि उपलब्ध एवं प्रचलित लेखों में से कौन से पवित्रशास्त्र अर्थात बाइबल का भाग बनेगे और कौन से नहीं।